ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 180-182
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

भारत के स्वाधीनता संग्राम में कुमाऊँ की महिलाओं का योगदान

प्रियंका पाण्डे

शोध अध्येता –राजनीति विज्ञान विभाग, सोबन सिहं जीना विश्वविद्यालय अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) भारत

Received-15.12.2023, Revised-21.12.2023, Accepted-26.12.2023 E-mail: Archanalohani09@gmail.com

सारांशः ***भारत के स्वाधीनता संग्राम में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ से महिलाओं ने पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर तथा कहीं कहीं अग्रणी बनकर अपनी कर्मठता, साहस, जुझारूपन, सतत संघर्षशीलता का परिचय दिया। प्रारम्भ में महिलाओं के लिए आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से जुड़ पाना आसान नहीं था, क्योंकि समाज में रूढ़िवादिता अपने चरम सीमा में थी, किन्तु 14 जून 1929 को गॉधी जी व कस्तूरबा गॉधी के कुमाऊँ आगमन से महिलाओं की राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी को बढ़ावा मिला, महिलाऍं जुलूस व सभा में शामिल हुई। यही से कुमाऊँ में महिला आंदोलन की शुरूवात हुई। अधिंकाश पुरूष नेतृत्व कर्ता जब जेल में थे, तब महिलाओं ने ही आंदोलन का नेतृत्व की बागडोर संभाली। पहाड़ की महिलाओं ने अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भी आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश सरकार के उत्पीड़न के खिलाफ आंदोलन के साथ साथ सार्वजनिक सभाऍं की विदेशी शराब व सामान बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया। खादी बेची व राष्टीय आंदोलन में भाग लिया, जिसमें विशनी देवी शाह,दुर्गा देवी पंत, तुलसी देवी, शांति देवी पंत, कुती वर्मा,मंगला देवी,जीवन्ती देवी, शकुंन्तला देवी, रेवती देवी, पद्मा देवी, भक्ति देवी, आदि महिलाऍं विशेष रूप से सक्रिय रही,नमक सत्याग्रह के दौरान नैनीताल में विमला, जानकी, भागीदारी, शकुन्तला,सावित्री व पद्मा जोशी महिलाऍं विशेष रूप से सक्रिय रही। आंदोलन में महिलाओं के बढ़ते योगदान को दबाने के लिए 1932 में राज्य की 8 महिलाओं को फतेहगढ़ जेल तथा पद्मा जोशी को लखनऊ जेल में भेजा गया, और कुन्ती वर्मा को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने का आदेश जारी किया गया। इस राष्ट्रीय आंदोलन में न सिर्फ महिलाऍं शामिल हुई, अपितु अग्रेजों की नृशंसतापूर्ण कार्यवाही का दृढ़तापूर्ण सामना भी किया। उन्होने सिद्व कर दिया कि वो कोमल जरूर है परंतु कमजोर नही है।***

कुंजीभूत शब्द– स्वाधीनता संग्राम, संघर्षशीलता ,रूढ़िवादिता, भागीदारी, सत्याग्रह, स्वतंत्रता, आर्थिक, राजनीतिक शक्तियॉं।

कुमाऊँ में आजादी के आंदोलन में महिलाओं में प्रतयक्ष व परोक्ष रूप से अहम भूमिका निभाई। हॉलाकि कुमाऊँ की महिलाओं का आजादी के आन्दोलन में प्रारम्भ में प्रत्यक्ष योगदान सम्भव न था, क्योंकि एक तो सामाजिक रूढ़िवादिता अपने चरम सीमा में थी,दूसरा कुमाऊँ के ग्रामीण इलाके चेतना से कोसों दूर थे, एवं महिलाओं की जाग्रति में अशिक्षा प्रमुख रोड़ा बनी हुई थी। सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, समाज में बाल विवाह, बहु विवाह, प्रर्दा प्रथा आदि कुरीतियॉं विद्यमान थी। उन्हें समाज में अपमान, शोषण का सामना करना पड़ता था। विधवाओं की स्थिति और भी दयनीय रही उन्हें सामाजिक कार्यो में तक शामिल होने की इजाजत नही थी,समाज उन्हें हेय दृष्टि से देखता था। गॉधी जी के कुमाऊँ आगमन के बाद यहॉ की महिलाओं में चेतना का विकास हुआ और महिलाओं ने आजादी की लड़ाई में मुख्य भूमिका निभाई। डॉ. सावित्री का मत है कि गॉधी जी देश के अन्य भागों की तरह 1915 में हरिद्वार आये। उनके अल्मोड़ा आने की खुशी में आगमन से पूर्व ही गॉधी निधि के लिए जिला अल्मोड़ा की महिलाओं ने चंदा पहले ही एकत्रित कर लिया ,जिसके सम्बन्ध में शक्ति 8 जून 1929 को लिखता है।[1] कि महिलाओं ने आर्थिक सहयोग दिया। नैनीताल में गॉधी जी के आगमन में भव्य स्वागत जुलूस किया गया यह अब तक का सबसे विशाल जुलूस था, जिसमें पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक थी। गॉधी जी ने महिलाओं को संबोधित किया। उनके व्याख्यानों से महिलाऍं इतनी अधिक प्रभावित हुई कि महिलाओं ने अपने आभूषण खोलकर गॉधी जी को भेटॅं किए। महिलाओं की इस तरह के सहयोग से जहॉ आन्दोलन और बेहतर बना वही आन्दोलनकारियों को आत्मबल मिला। कुमाऊँ में पहली बार 1918 में धनियाकोट मझेड़ा में महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी का एलान किया।

गॉधी जी 15 जून को भवाली और 17 जून को ताड़ीखेत पहुॅचे। वहॉ महिलाओं की सभा को सम्बोधित करते हुए कहा– तुम अपने साथ अन्य बहिनों को लाकर ब्रिटिश सरकार को हिला दो। यह तुम्हारा मेरे लिए सबसे बड़ा उपहार होगा। 18 जून को गॉधी जी का कारवॉ अल्मोड़ा की ओर चौघानपाटा में रेवरिण्ड ओंकले ने मंत्र पढ़ कर किया। महिलाओं ने गॉधी जी के हर आदेश का पालन किया। गॉधी जी के द्वारा ही महिलाओं में चेतना लाने का प्रयास किया गया। असहयोग आन्दोलन के दौरान स्थानीय स्तर पर महिलाऍं राष्ट्रीय आन्दोलन में पुरूषों के साथ कन्धें से कन्धा मिलाकर हिस्सेदारी करने लगी। 1922 में भागीरथी देवी और राजेश्वरी देवी ने कहा – बहिनों हम मैदान में आकर अहिंसक असहयोग के युद्व में मर्द बनकर खद्दर की वर्दी पहनकर इस अन्यायी सरकार से शान्ति की लड़ाई लड़े और अपने घरों के चूल्हें, चौकियों का इन्तजाम अपने कायर खुद्दार मर्दो के सुर्द करे।[2]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और कुमाऊँ की महिलाऍं– कुमाऊँ की महिलाओं ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया इस दौरान वे कई बार जेल भी गयी। नैनीताल से विमला देवी,, जानकी देवी साह, शकुन्तला देवी, भागीरथी देवी, पद्मा देवी जोशी तथा सावित्री देवी सक्रिय महिलाऍं थी। अल्मोड़ा में कुन्ती देवी वर्मा, दुर्गादेवी पन्त, भक्तिदेवी त्रिवेदी, तुलसी देवी, बच्ची देवी पाण्डे आदि के नेतृत्व में 100 से अधिक महिलाओं का संगठन था। जिन्होने मोहन जोशी व शान्तिलाल त्रिवेदी के घायल होने के बाद झण्डा सत्याग्रह में योगदान दिया। 1931 में बागेश्वर में महिलाओं का सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें सभी वर्ग की महिलाओं ने बढ–चढ़ कर हिस्सेदारी करी तथा पूरे कुमाऊँ में महिलाओं को जागरूक करने,विदेशी कपड़ो की होली जलाने व शराब सुल्फें का विरोध ,खादी का प्रचार आदि का निर्णय लिया गया। विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के लिए एक दल हल्द्वानी गया, जहॉ विदेशी कपड़ों

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

की दुकानों पर धरना दिया गया। जिसके कारण सरकार ने कुन्ती वर्मा,मंगला देवी,जीवन्ती देवी,भागीरथी देवी,रेवती देवी,पद्मा देवी ,पनी देवी आदि को गिरफतार किया। यह उत्तराखण्ड में महिला सत्याग्रहियों की पहली गिरफतारी थी।[3] अमृत बाजार पत्रिका ने सविनय अवज्ञा में कुमाऊँ की महिलाओं की सक्रियता को स्पष्ट करते हुए लिखा है समस्त उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय संग्राम में अल्मोड़ा व नैनीताल सबसे आगे है। अल्मोड़ा में बिसनी देवी साह कांग्रेस कार्यकर्ताओं की भूमिका में सर्वप्रथम है।[4]

कुर्माचल महिला सुधार सम्मेलन– नवम्बर 1932 को कुर्माचल महिला सुधर सम्मेलन बद्रीश्वर अल्मोड़ा के मैदान में आयोजित किया और दुर्गा देवी पंत को अध्यक्ष चुना गया। इस सम्मेलन में तुलसी देवी रावत ने स्वरचित कविता पढ़ी :

ऐ बहिनों जाग उठो, वीर तत्वों को अपनाओं
राष्ट्र की पुकार पर, बलिदान हो जाओं।
कायर न कहने पाये, कोई होश सम्भालो।
वीर जननी हो तुम, तनिक न घबराओं।
घर के भीतर तुम, तनिक न घबराओं।
सोये हुओं को अब, तुम जगाओं।
हिल मिल के सब, संगठन की बंशी बजाओं।
फिर शान्ति की पताका, विश्व मे फहराओं।[5]

डॉ. सावित्री कैड़ा जन्तवाल का मत है मै कहना चाहूँगी कि कुमाऊँ में जितने भी राष्ट्रीय व स्थानीय जन आन्दोलन हुए उनमें यहॉ की महिलाओं का सक्रिय योगदान रहा। यद्यपि प्रारम्भ में वे सामाजिक प्रतिबन्ध के कारण खुल के सामने नहीं आ पायी, परन्तु 1921 के बाद राष्ट्रीय स्तर की तरह प्रत्यक्ष रूप में उन्होने समूचे स्थानीय आन्दोलनों में संकीर्ण विचारधाराओं को तोड़कर जबर्दस्त महिला श्क्ति का प्रदर्शन किया। दमनकारी शासक को यह दिखा दिया कि कुमाऊँ का महिला समाज कितना जागरूक है। सम्पूर्ण कुमाऊँ क्षेत्र राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत हो गया था और अल्मोड़ा नगर तो कुमाऊँ में आन्दोलन का तीर्थ स्थान सा बन गया था।[6]

व्यक्तिगत सत्याग्रह और कुमाऊँ की महिलाऍं– 1940–41 में गॉधीजी के आवहान पर व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन के तहत कुमाऊँ में भी गिरफतारियॉ हुई। जिसमें महिलाओं, काश्तकारों, शिक्षकों, छात्रों की भागीदारी रही। महिलाओं की हिस्सेदारी इस दौर में काफी प्रभावशली रही। महिलाओं में शोभा मित्तल, भागीरथी देवी, यशोधरा देवी, कुंती देवी वर्मा, भागीरथी देवी साह, भवानी देवी जोशी, सरस्वती देवी, मालती देवी, कुन्ती देवी, चन्दा देवी ,धनी देवी, रेवती देवी महिलाओं का नाम उल्लेखनीय है। 1941 में महिला अध्यापिका गोमती देवी ने गंगोलीहाट की प्राइमरी पाठशाला से इस्तीफा दिया वे पहली महिला अध्यापिका थी। जिन्होने अपने पद को छोड़ा था।[7]

भारत छोड़ो आन्दोलन और कुमाऊँ की महिलाऍं– 1942 का आन्दोलन ग्रामीण क्षेत्रो में अधिक निर्णायक रहा। सालम क्रान्ति में जानकी बिष्ट का मूक सहयोग अद्वितीय है। सालम क्रान्ति के दौरान वहॉ के आन्दोलनकारियों की गुप्त बैठके उन्हीं के घर में होती थी। वे पुलिस से छिपकर वहॉ शरण लेती थे। सालम काण्ड के पश्चात रामसिंह आजाद व रेवाधर पाण्डे फॉसी की सजा सुनाने के बाद जब फरार हुए तो कई दिनों तक नयन सिंह बिष्ट व जानकी देवी ने उन्हे शरण दी और देवली गौशाले में छिपा दिया। भोजन आदि की व्यवस्था गुप्त रूप से करती थी।[7] यह आन्दोलन इतना तीव्र था कि महिलाऍं चूल्हा चौका छोड़ कर सड़को पर उतरने को आतुर हो गयी। सरकार द्वारा गिरफतारियॉ की जाने लगी। सरकार के इस व्यवहार को महिलाओं ने गम्भीरता से लिया। और उन्होने विभिन्न स्थानों पर जुलूस व सभा आदि का आयोजन किया। फलतय जगह जगह गॉव शहर महिलाओं को गिरफतार किया जाने लगा।

नैनीताल महिलाओं ने कई बार तार कटवाने, डाक बंगले, जंगलात के मुख्यालय व अन्य कई स्थानों में आगजनी करवाने में मुख्य हाथ रहा। दानसिंह बिष्ट और उनके सहयोगी जंगलात के कार्यातय में आग लगाने जब असफल हुए तो कुन्ती देवी वर्मा का कहना था कि – तुमसे इतना काम न हो सका लो अपने हाथ में चूड़ियॉ पहन लो। मै अकेली जाती हूँ, आग लगाकर ही वापस लौटुँगी। उस समय की महिलाओं के अन्दर पुरूषों से भी अधिक साहस था वे अपनी जान की परवाह किए बिना आन्दोलन में कूद गयी थी। और आन्दोलन को सार्थक भी बनाया।

1942 में सोमेश्वर में हुई एक सभा में महिलाओं उपस्थिति को कम देखकर सरला बहन का कहना था कि महिला और पुरूष दोनों समाज के समान अंग है। जिस समाज में महिलाओं को शिक्षा, संस्कृति आदि का ज्ञान न हो तथा बच्चों के पालन पोषण का पर्याप्त समय न मिलता हो ,उस समाज की स्थिति वैसी ही है जैसे एक लगड़े व्यक्ति की। नेतृत्वकर्ताओं ने ना केवल समाज में नव चेतना का संचार किया, बल्कि महिलाओं के हितों के लिए आवाज भी उठाई उन्हें अपने अधिकारों के लिए जागरूक भी किया। उन्होनें ना केवल आन्दोलन में भागीदारी की, बल्कि पुरूष आन्दोलनकारियों के जेंल में होने में आन्दोलन को रूकने नहीं दिया वरन् बागडोर अपने हाथों में लेकर सफल नेतृत्व भी किया। उन्होने गॉव गॉव जोर आन्दोलन की अलख जगायी तथा लोगों को साहस बंधाया और आगे बढ़ी।

निष्कर्ष– निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि कुमाऊँ की महिलाओं ने सीमित संसाधनों सामाजिक संकीर्णता, रूढ़िवादिता होने के बाद भी आजादी की लड़ाई में मुख्य भूमिका निभाई। तमाम सामाजिक दबावों और जिम्मेदारियों के बावजूद भी वे महिलाऍं स्वंय आगे आयी। वे घर, खेतों का कार्य करने के बाद भी गॉव गॉव जाकर आजादी की चेतना जगाने में कभी पीछे नहीं रही। नेत्तृवकारी महिलाओं ने समाज में घर घर जाकर विनती की कि अपने घरों की स्त्रियों को वे महिला संगठन में आने दे, इस दौरान उन्हें कई बार अपमान और उत्पीड़न का भी सामना करना पडता था। छोटे से कस्बे से होने के बावजूद भी उन्होने जिस तरह अग्रेंजी सरकार से लड़ाई लड़ी। महिलाओं की सक्रियता का परिचय इस बात से होता है कि गर्भावस्था के जोखिम भरे दिनों में भी वे जेल जाने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

से नही हिचकी तथा वही बच्चें को जन्म दिया, किन्तु उन्हे वह सम्मान आज भी राष्ट्रीय स्तर में नहीं मिल पाया, जिसकी वह सही मायने में हकदार हैं। आज आवश्यकता इस बात की है, उन महिलाओं के कार्यो को विद्यालयी पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाय उनके कार्यो को हाशिये में लाये जाये, जिससे समाज में महिलाएँ प्रेरित हो और अपने साथ होने वाले उत्पीड़न, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेंरित हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी, नन्दन केसरी : उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, वाणी प्रकाशन,संस्करण 2020 पृ0 102.
2. शक्ति 14 फरवरी 1922.
3. रावत, अजय सिंह : उत्तराखण्ड का इतिहास, अंकित प्रकाशन, संस्करण 2022 पृ0 460.
4. धामी, सिंह भगवान : यूकेपीडिया,समय साक्ष्य, 2021.
5. रावत, सिंह अजय : कुमाऊँ का इतिहास, संस्करण 2022 पृ0 506.
6. वही पृ0 507.
7. पहाड़ पत्रिका, भाग 4 पृ0 221.
8. रावत, अजय सिंह : उत्तराखण्ड का इतिहास, अंकित प्रकाशन, संस्करण 2022 पृ0 470.

*****